

A person with a backpack is walking away from the viewer across a vast, arid, reddish-brown landscape. In the background, there are rugged mountains under a clear blue sky with a few white clouds. The overall scene conveys a sense of adventure and exploration.

मिट्टी से उठे साधक

प्रोफेसर शिवा शंकर त्रिवेदी की चेतन यात्रा



यह कहानी किसी साधारण वैज्ञानिक की नहीं है, बल्कि एक ऐसे साधक की है जिसने निर्धारित सीमाओं को अस्वीकार कर दिया। प्रोफेसर शिवशंकर त्रिवेदी उन दुर्लभ प्रतिभाओं में से थे जिन्होंने ज्ञान को किताबों के पन्नों तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे प्रकृति के सबसे गूढ़ रहस्यों में खोजा।

उनके भीतर हमेशा एक जलता हुआ प्रश्न था—क्या जीवन और शरीर को समझने का कोई ऐसा तरीका हो सकता है जो विष को दबाए नहीं, बल्कि शक्ति को जाग्रत करे? उनका जीवन, मिट्टी की सादगी से लेकर बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (BHU) की अकादमिक ऊँचाइयों तक, उस अटूट विश्वास की गाथा है कि ब्रह्मांड एक सार्वभौमिक सत्य द्वारा संचालित है।

यह उस मन की यात्रा है, जिसने सवाल पूछना नहीं छोड़ा, राजनीतिक संघर्षों में सिद्धांतों का साथ दिया, और अंत में एक ऐसी चिकित्सा पद्धति (पोषक ऊर्जा विज्ञान) विकसित की जिसने हजारों लोगों के जीवन को छुआ।





मिट्टी से ज्ञान का अंकुरण

प्रोफेसर शिवा शंकर त्रिवेदी का जन्म उत्तर प्रदेश के बलिया जिले में नारायण गढ़ के द्विजनपुर गाँव के एक किसान परिवार में हुआ था। उनका प्रारंभिक जीवन प्रकृति की पाठशाला थी, जहाँ मिट्टी, पेड़ और खेत उनके पहले शिक्षक बने।¹

बचपन में एक दिन, उन्होंने अपने पिता से सवाल किया, "इस मिट्टी में ऐसा क्या है कि इसमें से जीवन निकलता है?"

उनके पिता का उत्तर सरल, किंतु जीवन का सार था: "जीवन बाहर से नहीं आता, यह यहीं से बनता है।"

यह विचार उनके मन में बीज की तरह बैठ गया। उन्होंने देखा कि प्रकृति खुद को पुनर्जीवित करना जानती है—सूखी डाल पर पत्तियाँ आती हैं, निर्जीव दिखने वाला बीज सही परिस्थिति में अंकुरित होता है। यहीं से उनके भीतर यह मौलिक विचार विकसित हुआ: प्रकृति अपने आप को संभालना जानती है।¹

यही वह नींव थी जिसने उनके सोचने के तरीके को अलग कर दिया—कि उपचार बाहर से थोपा नहीं जाता, बल्कि भीतर से जाग्रत होता है।





बनारस का ज्ञान:
साहित्य और चेतना की खोज

आध्यात्मिक और वैज्ञानिक चेतना का संगम उनके शैक्षणिक जीवन में दिखाई दिया। उन्होंने प्रतिष्ठित बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (BHU), वाराणसी से अपनी औपचारिक शिक्षा प्राप्त की।

BHU में, एक ओर विज्ञान के प्रति उनकी जिज्ञासा थी, वहीं दूसरी ओर अंग्रेजी साहित्य के लिए एक गहरा प्रेम विकसित हुआ। उन्होंने मिल्टन, शेक्सपियर, कीट्स और हार्डी को अपने पसंदीदा लेखकों में गिना। उन्होंने महसूस किया कि ज्ञान केवल प्रयोगशाला तक सीमित नहीं है, बल्कि साहित्य और संस्कृति भी चेतना के गूढ़ रहस्यों को उजागर करते हैं।

यह बहुमुखी प्रतिभा (polymath) ही थी जिसने उन्हें केवल समस्याओं पर नहीं, बल्कि जीवन की मूलभूत 'प्रक्रिया' पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रेरित किया।





एक घटना जिसने सब बदल दिया

ज्ञान की खोज सामान्य गति से चल रही थी, लेकिन 1965 में एक व्यक्तिगत त्रासदी ने उनके जीवन की दिशा को सदा के लिए बदल दिया।

उनके छोटे भाई, दयाशंकर तिवारी (Dayashankar Tiwari), जो पूरी तरह स्वस्थ थे, अचानक गंभीर रूप से बीमार पड़ गए। आधुनिक चिकित्सा प्रणाली, तमाम जाँचों और प्रयासों के बावजूद, न तो बीमारी को समझ पाई और न ही उन्हें बचा पाई। कुछ ही दिनों में उनकी मृत्यु हो गई।

इस दुख ने प्रोफेसर त्रिवेदी के भीतर एक शांत, किंतु अटूट संकल्प पैदा किया: अगर चिकित्सा इतनी विकसित है, तो वह जीवन के इस मूलभूत प्रश्न का उत्तर क्यों नहीं दे पाई?

यह असंतोष गुस्से में नहीं, बल्कि एक वैज्ञानिक खोज में बदल गया—उन्होंने इस सवाल का जवाब खोजने का फैसला किया कि **"क्या शरीर को ठीक करने के लिए उसे कमजोर करना सही तरीका है?"**





चेतन रसायन और 'अन्न' की
अवधारणा

अपने बड़े भाई, डॉ. उमा शंकर तिवारी के साथ वर्षों के शोध के बाद, प्रोफेसर त्रिवेदी ने जीवन को समझने की एक नई अवधारणा रखी। उन्होंने महसूस किया कि शरीर केवल जड़ पदार्थों का समूह नहीं है, बल्कि यह चेतना से जुड़ी सक्रिय प्रणाली है।

उन्होंने "conscious chemistry" (चेतन रसायन) की अवधारणा दी, जहाँ रसायन केवल प्रतिक्रिया नहीं करता, बल्कि एक दिशा भी लेता है।

उनके अनुसार, शरीर का निर्माण "अन्न" या "ग्रेन" नामक सूक्ष्म कणों से होता है, जो केवल भोजन नहीं, बल्कि वह मूल इकाई है जो शरीर को ऊर्जा देती है।

उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला: जीवन केवल बनता नहीं, वह संचालित भी होता है।



प्रोफेसर त्रिवेदी के पूरे शोध का केंद्र बिंदु शरीर की आंतरिक प्रक्रिया, उपापचय (Metabolism) पर केंद्रित हो गया। उन्होंने इसे शरीर का 'मुख्य प्रबंधक' कहा।

यह उपापचय ही तय करता है कि शरीर किसे स्वीकार करेगा, क्या उपयोगी है और क्या नहीं, और यही शरीर की शक्ति और कमजोरी दोनों का कारण है।

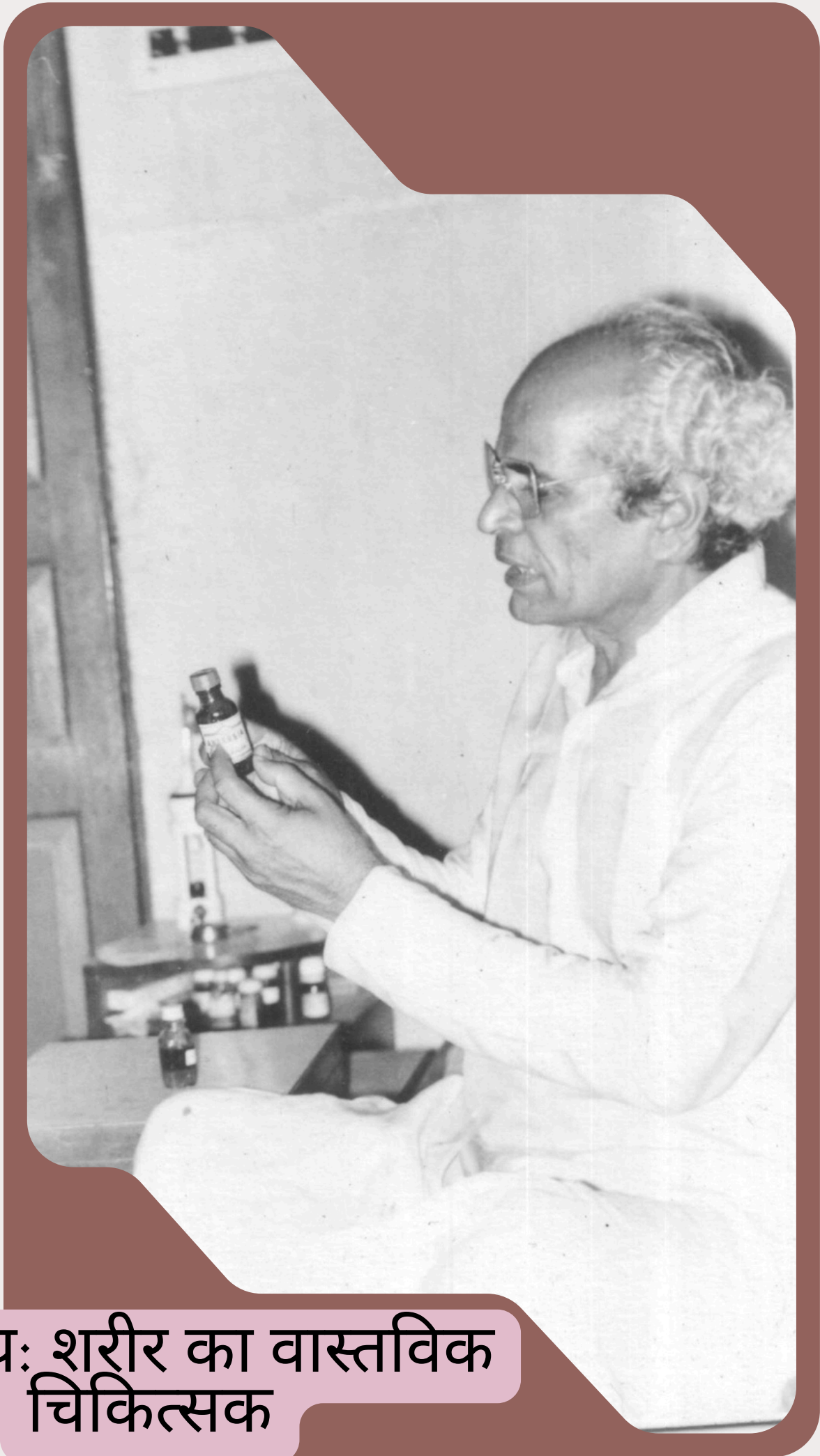
उन्होंने डॉ. उमा शंकर तिवारी से कहा: "हम रोग से लड़ रहे हैं, लेकिन शरीर को समझ नहीं रहे।"

सही लड़ाई क्या थी?

"शरीर को इतना सक्षम बनाना कि उसे लड़ने की ज़रूरत ही न पड़े।"

यही वह मूल सिद्धांत था जिसने पोषक ऊर्जा विज्ञान (Nutrient Energy Science) को जन्म दिया। इसका लक्ष्य रोग को खत्म करना नहीं, बल्कि उपापचय को संतुलित और मजबूत करके शरीर को स्वयं को ठीक करने में सक्षम बनाना था। इस पद्धति ने हजारों कैंसर रोगियों को ठीक होने में सफलतापूर्वक सहायता की।





उपापचयः शरीर का वास्तविक
चिकित्सक

अब उनका काम केवल चिकित्सा तक सीमित नहीं रहा था।

वह धीरे-धीरे जीवन को एक व्यापक और गहरी दृष्टि से देखने लगे थे।

उन्होंने महसूस किया कि विज्ञान को केवल पदार्थ तक सीमित करके समझना अधूरा है।

जीवन को समझने के लिए यह जानना जरूरी है कि वह चलता कैसे है—उसकी प्रक्रिया क्या है।

इसी खोज में उन्होंने जीवन को तीन स्तरों पर देखना शुरू किया—

- जड़ पदार्थ
- जीवन की प्रक्रिया
- चेतना

उनके अनुसार, जड़ पदार्थ केवल आधार है,

जीवन की प्रक्रिया उसका संचालन है,

लेकिन चेतना वह शक्ति है जो पूरी व्यवस्था को दिशा देती है।



उन्होंने स्पष्ट कहा—

चेतना कोई केवल दार्शनिक कल्पना नहीं है,

बल्कि एक सक्रिय शक्ति है,

जो यह तय करती है कि शरीर के भीतर क्या और कैसे घटित होगा।

इसी समझ से उन्होंने एक नई अवधारणा रखी—

“conscious chemistry” (चेतन रसायन)

जहाँ रसायन केवल निष्क्रिय प्रतिक्रिया नहीं करता,

बल्कि एक दिशा के साथ कार्य करता है।

यह विचार उस समय के पारंपरिक विज्ञान से अलग था,

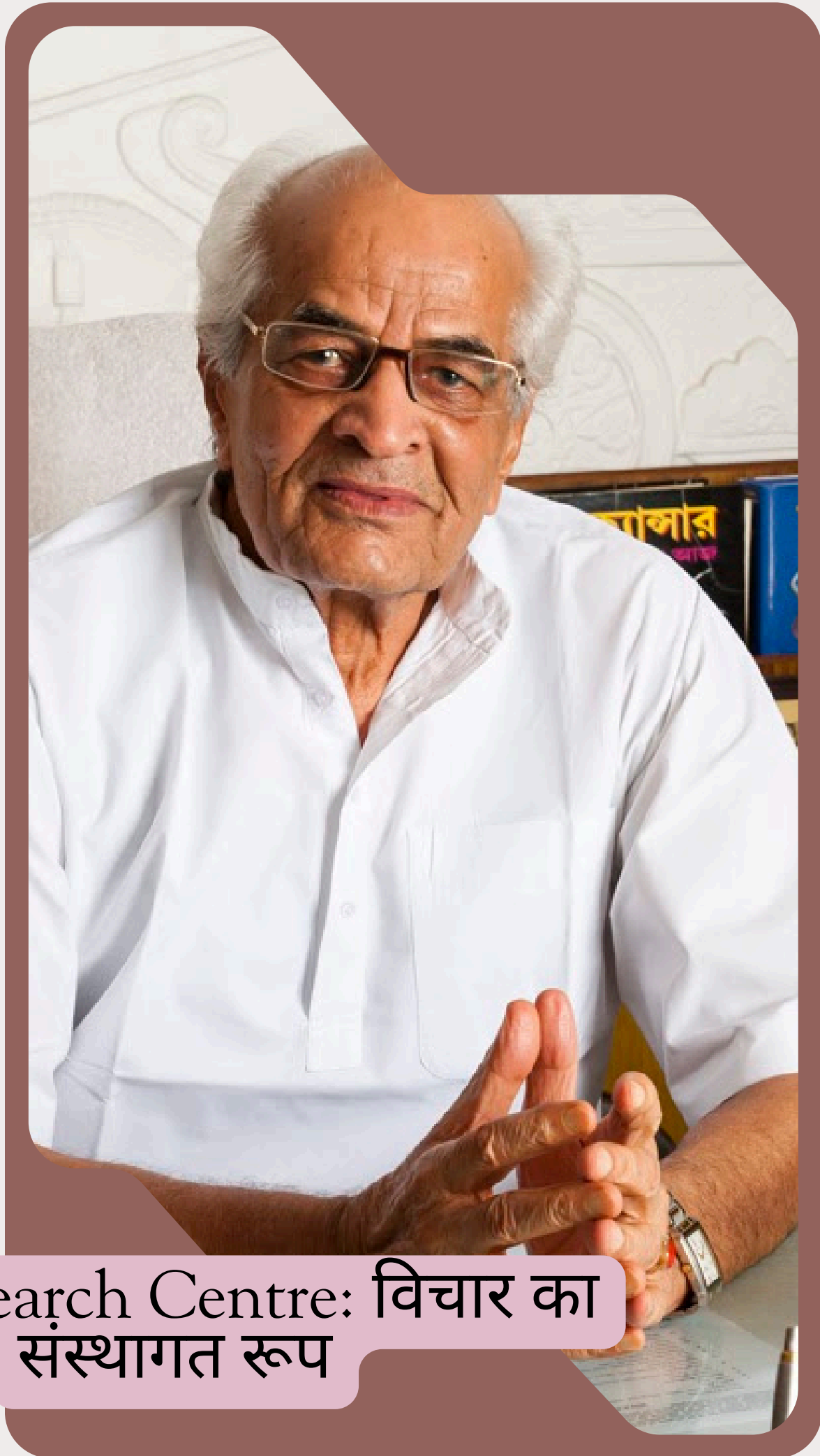
लेकिन यह किसी कल्पना पर नहीं,

बल्कि उनके निरंतर अवलोकन और अनुभव पर आधारित था।

उन्होंने जो देखा, उसे स्वीकार किया—

और जो स्वीकार किया, उसे सिद्धांत में बदल दिया।





D.S. Research Centre: विचार का
संस्थागत रूप

1965 की घटना से उपजा संकल्प अब एक मूर्त रूप लेने के लिए तैयार था। प्रोफेसर त्रिवेदी ने अपने दिवंगत छोटे भाई दयाशंकर तिवारी की स्मृति में D.S. Research Centre की स्थापना की।

शुरुआत साधारण थी—कोई आधुनिक उपकरण या बड़ी लैब नहीं। केवल एक विचार, कुछ साथी, और यह अटूट विश्वास कि दिशा संसाधनों से पहले तय होती है। इस केंद्र का जन्म केवल उपचार देने के लिए नहीं हुआ था। यह उस नई सोच को जन्म देने का प्रयास था जहाँ उपचार का मतलब था—शरीर को समझना, उसकी क्षमता को पहचानना, और उसे सही दिशा देना।

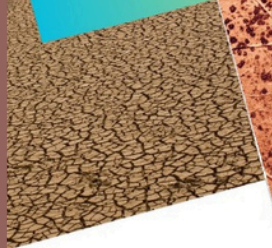
संघर्ष के शुरुआती दिनों में जब लोगों ने संदेह किया, तो उन्होंने मुस्कुराकर कहा, "जो काम करता है, वही सत्य है।" उन्होंने न अंधविश्वास का समर्थन किया, न ही अंध-विज्ञान का। उनका मानना था कि विज्ञान अनुभव से जन्म लेता है, और विश्वास परिणाम से।



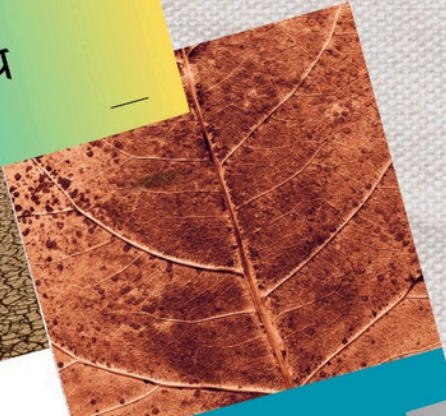


प्रोफेसर शिवा शंकर त्रिवेदी
सबके साथ

PROFESSOR SHANKAR TRIVEDI
CREATIONS



शंकर त्रिवेदी
श्री धरती, सोंधी बांस

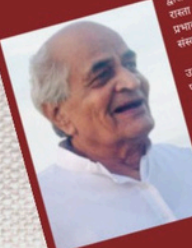


प्रोफेसर शिवा शंकर त्रिवेदी
अवनीप महाकाव्य

कुंती कुंती कुंती
कुंती कुंती कुंती
कुंती एक माँ
शिवाशंकर त्रिवेदी
सृजन-चेतना प्रकाशन



संज्ञौती के दिये
शिवाशंकर त्रिवेदी



प्रोफेसर शिवा शंकर त्रिवेदी एक वैदिक अनुसंधान के द्वारा केन्द्र पर चम्पल उपलब्ध के प्रभावशाली ब्रह्म, संस्कृति के एक अट्टल

उत्तर प्रदेश में बलिया जिले परिकार में जन्मे प्रोफेसर बाबलपुरी से बीए-एलएलबी में विशेष रुचि रही। अंग्रेजों के शासन के दौरान वे स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भाग ले चुके हैं। वे प्रकाशित किये, हाथी और इट

श्री त्रिवेदी किसी भी वैज्ञानिकी में मान्य अध्येतन करके प्रतिमान का पर जीवन के प्रति जीवन और व स्वतंत्रता



प्रोफेसर शिवा शंकर त्रिवेदी
युग-बोध

अमर
युगा है



शिवा शंकर त्रिवेदी
काव्य



संज्ञौती के दिये और अमर साहित्यिक कृति काव्य

प्रोफेसर त्रिवेदी की विरासत केवल विज्ञान तक सीमित नहीं थी।

वह शब्दों में भी उतनी ही जीवित थी, जितनी उनके विचारों में।

वे केवल शोधकर्ता नहीं थे,
बल्कि एक संवेदनशील लेखक भी थे—

जो जीवन को प्रयोगशाला में नहीं,
मन और समाज में समझते थे।

उनकी लेखनी में एक सादगी थी,
लेकिन उसी सादगी में गहराई छुपी थी।

उन्होंने कविता लिखी,
उपन्यास लिखे,

और ऐसी रचनाएँ दीं

जो सीधे जीवन से निकली हुई लगती हैं।

उनकी प्रमुख कृतियाँ—

“कुंती एक माँ”, “अवनीश” और “सूखी धरती सोंधी
वास”—

केवल साहित्य नहीं हैं,

बल्कि मनुष्य के भीतर चलने वाले संघर्षों और भावनाओं
का आईना हैं।



लेकिन उनकी सबसे अधिक छू लेने वाली रचना है—
“सँझौती के दिये”

यह केवल लघुकथाओं का संग्रह नहीं,
बल्कि उन छोटे-छोटे क्षणों की कहानी है
जहाँ इंसान अंधेरे के बीच भी रोशनी ढूँढना सीखता है।
इन कहानियों में कोई बड़ी बातें नहीं कही गईं,
लेकिन हर कहानी के अंत में
एक छोटी-सी सच्चाई खड़ी होती है—
जो पाठक को अंदर तक सोचने पर मजबूर कर देती है।
उनका विश्वास सरल था,
लेकिन गहरा—
अतीत बदला नहीं जा सकता,
लेकिन उससे सीखा जरूर जा सकता है।
और शायद इसी सीख से
भविष्य थोड़ा बेहतर बनाया जा सकता है।





“जहाँ रसायन चेतना के अनुसार चलता है
—वही चेतन रसायन है।”

प्रोफेसर त्रिवेदी ने 26 अप्रैल 2015 को इस नश्वर संसार को अलविदा कहा,
आज भी उनका चिंतन,
डी.एस. रिसर्च सेंटर के माध्यम से,
नए लोगों तक पहुँच रहा है—
धीरे-धीरे, लेकिन गहराई से।
उनकी असली विरासत कोई इमारत या संस्था नहीं,
बल्कि वह सोच है, जो उन्होंने लोगों के भीतर जगा दी—
प्रश्न करो।
प्रकृति को समझो।
और अपने शरीर पर भरोसा करो।
उनका जीवन कई धाराओं का संगम था—
विज्ञान की स्पष्टता,
साहित्य की संवेदनशीलता,
और राष्ट्र के प्रति निस्वार्थ समर्पण।
इन्हीं सबका मेल उन्हें अलग बनाता है—
एक ऐसे व्यक्ति के रूप में,
जो केवल अपने समय में नहीं जीया,
बल्कि समय से आगे सोचकर गया।
वह सच में एक पुनर्जागरण पुरुष थे—
जो चला गया, पर रुका नहीं।





“वह व्यक्ति नहीं जाता,
जो एक विचार छोड़ जाता है।”